Excerpts from the Islamic Teachings on Animal Welfare

مُقْتَطَفَاتٌ مِنَ التَّعَالِيمِ الإِسْلَامِيَةِ عَنْ رِعَايَةِ الحَيَوَانَاتِ

पशुओं पर अधिकार ।। विजय।। के विषय में इस्लामी शिक्षा के कुछ पाठ

Islam lays great emphasis on animal rights and man's responsibility for their welfare. This pamphlet contains a few short selections as examples.

يُولِي الإِسْلَامُ عِنَايَةً خَاصَّةً بِحُقُوقِ الحَيَوَانِ وَبِمَسْئُولِيَةِ الإِنْسَانِ حَوْلَ رِعَايَتِهَا
يَتَضَمَّنُ هٰذَا الكُتَيِّبُ عَدَدًا مِنَ المُخْتَارَاتِ المُخْتَصَرَةِ كَنَمَاذِجَ:

इस्लाम ने पशुओं के अधिकारों को बहुत महत्व दिया है । और मनुष्य को आदेश दिया है कि उनके अधिकारों की रक्षा करे ।इस संक्षिप्त पत्रिका में चुने हुए उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

"The Holy Prophet Muhammad (S) was asked by his companions if kindness to animals was rewarded in the life hereafter. He replied:

Al-Hafiz B A Masri,
The Late (Sunni) Ex-Imam,
Shah Jehan Mosque, Working, Surrey, England.

الحافظ بشير احمد مصري. الإمام السابق (من أهل السنة)
شاه جهان مسجد. ووكنگ. انجلترہ

Yes, there is a meritorious reward for kindness to every living creature'." (Bhukhari)

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَة قَالَ ..... قِيْلَ اِنَّ لَنَا فِی الْبَهَائِمِ اَجْراً - قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :
" فِیْ كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ رَطْبَةٍ اَجْرًا " (البخاری)

श्री अबुहरैरा ।। रजि.।। का कथन है कि एक बार रसूलुल्लाह ।। स.।। से सहाबा ।। उनके साथीगण।। ने प्रश्न किया : क्या पशुओं पर सहानुभूति का पुण्य भी मृत्यु के पश्चात मिलेगा ?
हुजूर ।। स.।। ने उत्तर दिया : निःसन्देह मिलेगा ।
हर जीवित प्राणी पर सहानुभूति का पुण्य होता है ।

।। हदीस–बुखारी शरीफ।।

STATUS OF ANIMALS

All creatures on earth are sentient beings. "There is not an animal on earth, nor a bird that flies on its wings — but they are communities like you." (The Qur'an, 6:38)

وَضْعُ الْحَيْوَانِ :

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّا اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ،
(اَلْاَنْعَام - ٦ : ٣٨)

पशुओं का महत्व व स्थान :

ईश्वर ने पशुओं के सम्मान व स्थान के विषय में स्वंय इन शब्दों में स्पष्ट किया है : इस सम्पूर्ण पृथ्वी पर कोई पशु ऐसा नहीं है और ना ही कोई पक्षी ऐसा है जिसका जोड़ा मनुष्य की तरह एक जाति न हो।

।। सूख–अल–इनाम ३८:६।।
कुरआन शरीफ ।। कलाम–मजीद।।

SANCTITY OF LIFE

"The Holy Prophet (S) admonished: 'Avoid the seven abominations [sins], and for one of the sins he recited the following verse of the Qu'ran: 'And kill not a living creature, which Allah has made sacrosant, except for a justifiable reason'."

(Al-Tirmidhi and Al-Nasai); (The Qu'ran, 6: 151 and 17: 33)

"The Holy Prophet (S) said: 'One who kills even a sparrow or anything smaller, without a justifiable reason, will be answerable to Allah.' When asked what would be a justifiable reason, he replied: 'to slaughter it for food — not to kill and discard it'."

(Ahmad and Al-Nasai)

قَدَاسَةُ الْحَيَاةِ :

عَنْ اَبِیْ مَسْعُوْد الْاَنْصَارِيِ اَنَّ قَالَ النَّبِیَّ صَلْعَمْ : " اِجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ "
فَذَكَرَ : قَتْلُ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللهُ اِلَّا بِالْحَقِ "
(اَلتِّرْمِذِی وَالنِّسَائِی) (الانعام - ٦ : ١٥١ وَبَنِیْ اِسْرَائِيْل - ١٧ : ٣٣)

عَنْ عَبْدِ اللهِ بن عَمْرٍو اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلْعَمْ قَالَ : " مَنْ قَتَلَ عَصْفُوْرًا فَمَا فَوْقَهَا بِغَيْرِ حَقِّهَا سَالَهُ اللهُ عَنْ قَتْلِهِ : قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَمَا حَقُّهَا - قَالَ : اَن يَذْبَحَهَا فَيَاكُلَهَا وَلَا يَقْطَعَ رَاْسَهَا فَيَرْمِیْ بِهَا " (اَحْمَدُ وَالنِّسَائِی)

पशुओं का सम्मान :

श्री इब्न–मसउदुलनिसारी ।। रजि.।। का कथन है कि रसूलुल्लााह ।। स.।। ने कहा : इंसान को दी गयी जिम्मेदारियों में सात प्रकार के कार्यों से बचो और उन्होंने सात कार्यों में से एक के विषय में बताया : किसी भी ऐसे शरीर की बिना कारण व अधिकार हत्या न करो जिसकी हत्या को ईश्वर ने निषिद्ध घोषित किया हो।

।। हदीस–तिरमिजी शरीफ।।

श्री उमर ।। रजि.।। का कथन है कि रसूलुल्लाह ।। स.।। ने कहा : जो व्यक्ति किसी सूक्ष्म जीव की भी बिना कारण हत्या करता है तो वह उसका उत्तरदायी है और उसे ईश्वर के समक्ष उसका उत्तर देना होगा। रसूलुल्लाह ।। स.।। से उनके साथियों ने पूछा : हे रसूलुल्लाह इसका कारण क्या है ? रसूलुल्लाह ।।स.।। ने कहा : इसका कारण यह है कि इसे भोजन के लिए उचित प्रकार से प्रयोग करने की आज्ञा तो है परन्तु बिना कारण सर काटकर फेंक देने की नहीं।

।। अहमदुन्निसाई।।

GENERAL TREATMENT

"The Holy Prophet (S) told of a prostitute who, on a hot summer day, saw a thirsty dog hovering around a well, lolling his tongue. She lowered her socks down the well and watered the dog. Allah forgave all her sins [for this one act kindness]"

(Muslim)

"The Holy Prophet (S) narrated a vision in which he saw a woman being chastised

after death because she had confined a cat during her life on earth without feeding and watering it, or even letting it free so that it could feed itself."

(Muslim)

مَعَامَلَةُ الحَيَاةِ :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلْعَمْ أَنَّ امْرَأَةً بَغِيًّا رَأَتْ كَلْبًا فِي يَوْمٍ حَارٍّ يُطِيفُ بِبِئْرٍ. فَنَزَعَتْ لَهُ بِمُوقِهَا. فَغُفِرَ لَهَا. (صَحِيح مُسْلِم)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلْعَمْ قَالَ : "عُذِّبَتِ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ لَمْ تُطْعِمْهَا وَلَمْ تَسْقِهَا. وَلَمْ تَتْرُكْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الْأَرْضِ". (صَحِيح مُسْلِم)

पशुओं से हमदर्दी व उनका सम्मान :

अबुहरैरा ।। रजि.।। का कथन है कि रसूलुल्लाह ।। स.।। ने एक वेश्या के विषय में बताया है कि भीषण गरमी के दिन उसने एक कुत्ते को देखा जो प्यास के कारण अपनी जीभ बाहर निकाले कुएं के पास चक्कर लगा रहा था। उस औरत ने अपना मोजा कुएं में डालकर भिगोया और उसे निचोड़कर कुत्ते को पानी पिला दिया। इस पुण्य से ईश्वर ने उसके सारे पाप क्षमा कर दिये।

श्री अबुहरैरा ।। रजि.।। का कथन है कि रसूलुल्लाह ।। स.।। ने बताया : एक स्त्री पर ईश्वर का भयंकर प्रकोप इसलिए हुआ क्योंकि उसने एक बिल्ली को बंदी बनाकर उसे भोजन व पानी नहीं दिया और ना ही उसे स्वतंत्र छोडा जिससे कि वह अपना भोजन स्वंय ढूढ सके।

।। हदीस–सहीह–मुस्लिम।।

PHYSICAL INJURY

"The Holy Prophet (S) forbade the beating, or the branding of animals. Once he saw a donkey branded on its face and said: 'may Allah condemn the one who branded it'."

(Muslim)

اَلجِرَاحَاتُ البَدَنِيَّةُ :

رَأَى النَّبِيُّ صَلْعَمْ حِمَارًا مَوْسُومَ الْوَجْهِ (مَكْوِيًّا فِي وَجْهِهِ) فَأَنْكَرَ ذَلِكَ وَقَالَ : لَعَنَ اللهُ الَّذِي وَسَمَهُ. (صَحِيح مُسْلِم)

पशुओं की शारीरिक स्वतंत्रता :

रसूलुल्लाह ।। स.।। ने पशुओं को चीरने या पहचानने के लिए किसी गरम वस्तु से उन पर निशान लगाने से सख्ती से मना कर दिया । एक बार एक गधे को देखा जिसके चेहरे पर निशानी के लिए दागा ।। अग्नि चिन्ह।।

गया था, तो रसूलुल्लाह बहुत क्रोधित हुए और कहा : जिसने भी यह किया है वह ईश्वर के आशीर्वाद से वंचित रहेगा।

।। हदीस–सहीह–मुस्लिम।।

BEASTS OF BURDEN

"The Holy Prophet (S) passed a camel who was so emancipated that his back had shrunk to its belly, and said: 'fear God in these beasts — ride them in good health and free them from work while they are still in good health'."

(Abu Dawud)

اَلحَيَوَانَاتُ لِلحَمْلِ :

عَنْ سَهْلِ بْنِ الْحَنْظَلِيَّةِ قَالَ مَرَّ رَسُولُ اللهِ صَلْعَمْ بِبَعِيرٍ قَدْ لَحِقَ ظَهْرُهُ بَطْنَهُ فَقَالَ : اتَّقُوا اللهَ فِي هٰذِهِ الْبَهَائِمِ الْمُعْجَمَةِ فَارْكَبُوهَا صَالِحَةً وَاتْرُكُوهَا صَالِحَةً. (أَبُوْدَاوُد)

भार ले जाने वाले पशु :

श्री सुहैल बिन हनजलैया ।। रजि.।। का कथन है कि रसुलुल्लाह ।। स.।। एक ऊँट के पास से गुजरे जो कि इतना निर्बल हो गया था कि उसके पेट और कमर सिकुड़कर एक हो गये थे । यह देखकर रसूलुल्लाह ।। स.।। ने ऊँट के मालिक से कहा से कहा : इन योग्य परन्तु मूक पशुओं के लिए ईश्वर से डरो । इन पर सवारी या भार का कार्य ऐसी ही स्थिति में करो जबकि ये स्वस्थ हों और इन्हें अच्छे स्वास्थ्य की स्थिति में ही विश्राम के लिए छोड़ दो ।

।। अबू दाउद।।

CAGING

"The Holy Prophet (S) said: 'It is a great sin for man to imprison those animals which are in his power'."

(Muslim)

وَضْعُهَا فِي الأَقْفَاصِ :

عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ النَّبِيُّ صَلْعَمْ : كَفَى بِالْمَرْءِ إِثْمًا أَنْ يَحْبِسَ عَمَّنْ يَمْلِكُ قُوتَهُ. (صَحِيح مُسْلِم)

पशुओं को बंदी बनाना :

श्री इब्न उमर ।। रजि.।। का कथन है कि नबीए करीम ।। स.।। ने कहा कि यह एक महापाप है कि मनुष्य उन पशुओं को बंदी बनाकर रखे जिन पर वह प्रभावी है।

।। हदीस–सहीह–मुस्लिम।।

VIVISECTION

There are numerous Islamic laws forbidding vivisection *(Al-muthla)* on a live

animal. Ibn'Umar reported the Holy Prophet (S) as having condemned those who mutilate any part of an animal's body while it is alive.

(Ahmad and other authorities)

اَلتَّشْرِيحُ :

قَالَ اِبْنُ عُمَر سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلعَم يَقُوْلُ : "من مَثَّلَ بِذِی روحٍ ـ ثُمَّ لَمْ يَتُبْ ـ مَثَّلَ اللهُ بِه
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ـ (اَحْمَدُ وَرُوَاتُهُ ثِقَاتٌ مَشْهُوْرُوْن)

जीवित पशुओं का रक्तपात व चीरफाड़ :

जीवन–यापन के इस्लामिक दृष्टिकोण से जीवित शरीर पर बिना कारण चीरफाड़ करना मना है। श्री उमर ।। रजि.।। का कथन है कि उन्होंने रसूलुल्लाह ।। स.।। को कहते हुए सुना है कि जो व्यक्ति किसी प्राणी की चीरफाड़ करता है और ईश्वर से क्षमा नहीं मांगता तो ईश्वर प्रलय के दिन उसकी चीरफाड़ करेगा।

ANIMAL BAITING AND BLOOD SPORTS

"The Holy Prophet (S) forbade the setting up of animals to fight each other."

(Abu Dawud and Tirmidhi)

"The Holy Prophet (S) condemned those who pinion and restrain animals in any other way for the purpose of target shooting *(Al-Masburah* and *Al-Mujaththamah).*

(Muslim)

إِثَارَةُ الحَيوَانَاتِ عَلَى المُصَارَعَةِ وَالاَلْعَابُ الدَّمَوِيَةُ :

عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ قَالَ نَهىٰ رَسُوْلُ اللهِ صَلعَم عَنِ التَّحْرِيشِ بَيْنَ الْبَهَائِم ـ (اَبُوْدَاوُدْ والتِّرمِذِی)
عَنْ اِبْنِ عُمَرَ اَنَّ النَّبِیَّ صَلعَم لَعَنَ مَنِ اتَّخَذَ شَيْئاً فِيْهِ الرُّوحُ غَرَضاً ـ (صَحِيحُ مُسْلِم)

पशुओं को लड़ाना और अपने आनन्द के लिए आखेट करना :

श्री इब्ने अब्बास ।। रजि.।। का कथन है कि सरकारे दो आलम ।। स.।। ने पशुओं को आपस में लड़ाने को मना किया है।

।। हदीस–तिरमेजी शरीफ।।

RELIGIOUS SACRIFICE OF ANIMALS

"Their flesh will never reach Allah, nor their blood — but your devotion and piety will reach Him."

(The Qur'an, 22: 37)

الحَيوَانَاتُ كَقَرَابِيْنَ دِيْنِيَّةٍ :

لَنْ يَنَالَ اللهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلٰكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوٰی مِنْكُمْ ـ (اَلْحَجّ ـ ٢٢ : ٣٧)

पशुओं की बलि :

कुरआने हकीम की सूरत अलहज ३२:२२ में स्पष्ट किया गया है कि ना तो पशुओं का मांस और ना ही उनका रक्त ईश्वर तक पहुँचता है। ईश्वर तक पहुँचता है तो सिर्फ मनुष्य का निश्चय व आज्ञापालन।

कुछ विशेष तथ्य व संक्षिप्त रूप शब्दों का स्पष्टीकरण :

।। स. ।। — सल्लल्लाहु अलइहीवसल्लम ईश्वर की उनपर सलामती हो।

।। रजि. ।। — रजिअल्लाहुतआलान्हा ईश्वर उनसे प्रसन्न रहे।

सहाबा — रसूलुल्लाह ।। स. । के वो साथी जिन्होंने उन्हें जीवित व ईमान ।। इस्लाम स्वीकार करने की स्थिति।। में देखा।

हदीस — हदीस वे शब्द, वाक्यांश व वे बातें हैं जो रसलुल्लाह ।। अ.।। ने बतायीं अपने साथियों को और जिनका अनुसरण करना प्रत्येक मुसलमान पर आवश्यक है ।

कुरआन मजीद कुरआन मजीद ईश्वर द्वारा रसूलुल्लाह ।। स. ।। को बताये गये आदेशों जानकारियों तथा तथ्यों का वह संग्रह जिसका पालन करना प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है।

हदीस ईश्वर के अवतार का कथन है जबकि कलाम मजीद ।। कुरआनपाक।। ईश्वर के वाक्य हैं जिनकी किसी भी स्थिति में उपेक्षा नहीं की जा सकती ।

यहां ध्यान में रखने योग्य बात यह है कि रसूलुल्लाह ।। स.।। ने अपने जीवन काल में बचपन से अन्त तक कभी झूठ नहीं बोला इसलिए उनके मुँह से निकला कथन शतप्रतिशत सही है, सन्देह की सीमा से परे।

अबुहरैरा ।। रजि.।। इब्ने अब्बास ।। रजि.।। हजरत उमर ।। रजि.।। आदि ये सब लोग रसूलुल्लाह के साथी हैं और ये सहाबा कहलाते हैं।

रूपान्तरण कर्ता व अनुवादक :	Translator :
खालिद. मौ	Khalid. M
लैंगवेज टीचर व शोधक	Languuage Teacher & Researcher
सत्यापित द्वारा :	Verified by:
मौलाना एवं मुफती	Maulana and Mufti
जुलफिकार अहमद कासमी	Zulfikar Ahmed Kasmi
इमाम व कतीब	Imam and Kateeb
जामा मस्जिद नौएडा	Jama Masjid, Noida.
गाजियाबाद।। उ.प्र.।।	Ghaziabad, U. P.